भारतीय इतिहास : एक पुनरावलोकन

अनिकेत रंजन

भारतीय इतिहास के आधुनिक काल में राष्ट्र निर्माण और राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान इतिहास की मूलधारा को न पहचान कर, उसके व्यापक और सार्वभौम रूवरूप को अनदेखा कर, राजनीति के सतही स्वरूप में उलझ जाने की प्रवृत्ति का आसानी से शिकार हुआ जा सकता है। राष्ट्रवाद और विकास काल में राष्ट्रहित की बात करना एक आदत और नीति बन जाती है। समाज के जागरूक वर्ग इसी दिशा में कार्यरत होते है। ऐसी स्थिति में इतिहासकार महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।